हफ़्तावार रिसाला : 385
Weekly Booklet : 385

Allah Pak Ke Bare Me 28 Suwal Jawab (Hindi)

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के मल्फ़ूज़ात का तह़रीरी गुलदस्ता

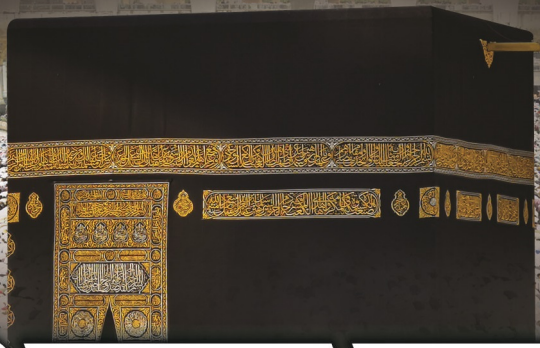

अल्लाह पाक

के बारे में 28 सुवाल जवाब

सफ़ह़ात 17

"अल्लाह बाबा आ जाएगा" कहना कैसा ? 04
"अल्लाह पाक ऊपर है" कहना कैसा ? 06
"अल्लाह पाक को ह़ाज़िरो नाज़िर" कहना कैसा ? 10
अल्लाह पाक को "सख़ी" कहना कैसा है ? 12

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल
मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले नीचे दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عزوجل जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** पाक! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े ख़ोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़ व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी इन्डिया)

येह रिसाला **"अल्लाह पाक के बारे में 28 सुवाल जवाब"**

मजलिसे **अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लती पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए WhatsApp, Email या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट

फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के पास, मिरज़ापूर, अह़मदआबाद-1, गुजरात।

MO. 98987 32611 E-mail : hind.printing92@gmail.com

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيّٖن ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم ط

अल्लाह पाक के बारे में 28 सुवाल जवाब

दुआए ख़लीफ़ए अमीरे अहले सुन्नत : या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 16 सफ़ह़ात का रिसाला : "**अल्लाह पाक के बारे में 28 सुवाल जवाब**" पढ़ या सुन ले उसे अपनी मह़ब्बत अ़त़ा फ़रमा और उस की मां बाप और औलाद समेत बे ह़िसाब बख़्शिश फ़रमा । اٰمِيْن بِجَاهِ خَاتَمِ النَّبِيّٖن صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जिस ने मुझ पर एक मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा, **अल्लाह** पाक उस पर दस रह़मतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है । (ترمذی،2/27،حدیث:484)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

सुवाल आज कल गूंगे बहरों को तरबियत देने वाले "**अल्लाह**" का इशारा आस्मान की त़रफ़ उंगली उठवा कर सिखाते हैं, येह कहां तक दुरुस्त है ?

जवाब येह त़रीक़ा क़त़्अ़न ग़लत़ है । इन बेचारों के ज़ेह्न में येही नज़रिय्यात बैठ जाते होंगे कि "**अल्लाह** पाक ऊपर है या ऊपर उस का मकान है जिस में वोह रहता है" येह दोनों बातें कुफ़्र हैं । **अल्लाह** पाक जिहत (या'नी सम्त) से भी पाक है और मकान से भी । आस्मान की त़रफ़ इशारा करने के बजाए इन को हाथ के ज़रीए़ लफ़्ज़ "**अल्लाह**" बनाना सिखाना चाहिये और इस का त़रीक़ा निहायत ही आसान है । सीधे हाथ की

उंग्लियां मा'मूली सी कुशादा कर के अंगूठे का सिरा ऊपर की त़रफ़ थोड़ा सा बढ़ा कर शहादत की उंगली के पहलू के वस्त़ में लगा लीजिये, अब सीधी हथेली की पुश्त की त़रफ़ देखिये तो लफ़्ज़ ''اللہ (**अल्लाह**)'' महसूस होगा। इसी त़रह़ कर के उलटे हाथ की हथेली की अगली त़रफ़ देखेंगे तो **अल्लाह** लिखा हुवा नज़र आएगा।

फ़िल्में कुफ़्रिय्यात सीखने का ज़रीआ़ हैं

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह पाक के लिये मकान और जिहत (या'नी सम्त) साबित करने वाले जुम्ले लोगों में काफ़ी राइज होते जा रहे हैं मसलन ''ऊपर वाला'' कहना तो बहुत ज़ियादा आ़म है। जो कि अक्सर लोगों ने ज़ियादा तर फ़िल्मों ड्रामों से सीखा है। चूंकि हर मुसल्मान कुफ़्रिय्यात की पहचान नहीं कर पाता, इस वज्ह से न जाने कितने मुसल्मान रोज़ाना येह ग़लतियां करते होंगे। जिन लोगों से ज़िन्दगी में कभी एक बार भी येह जुम्ला सादिर हो गया हो उन्हें चाहिये कि इस से तौबा करें और नए सिरे से कलिमा पढ़ें और अगर शादी शुदा हैं तो नए सिरे से निकाह़ भी करें। काश ! मुसल्मान बुरे ख़ातिमे का डर अपने अन्दर पैदा करें, फ़िल्मों ड्रामों और गाने बाजों से कनारा कशी इख़्तियार करें और ज़रूरिय्याते दीन का इल्म ह़ासिल करें। आह ! मौत हर वक़्त सर पर खड़ी है ! मौत बीमारियों, धमाकों, हंगामों, सैलाबों, तूफ़ानी बारिशों, ज़ल्ज़लों, आतश ज़दगियों नीज़ तेज़ रफ़्तार गाड़ियों के ह़ादिसों के ज़रीए अच्छे ख़ासे कड़ियल जवानों को भी फ़ौरी तौ़र पर उचक कर ले जाती है और सारी ख़र मस्तियां और फ़न्कारियां ख़ाक में मिल जाती हैं

जल गए परवाने शम्एं पानी पानी हो गईं मेरा तेरा ज़िक्र हो कर अन्जुमन में रह गया

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 1/98, 99)

सुवाल अगर बच्चे पूछें कि **अल्लाह** कहां है ? तो उन्हें क्या जवाब दिया जाए और इस मौक़अ़ पर क्या एह़तियातें ज़रूरी हैं ?

जवाब वाक़ेई़ येह बहुत नाज़ुक सुवाल है। आ़म त़ौर पर लोग ऐसे सुवाल पर ऊपर हाथ उठाते हैं कि **अल्लाह** ऊपर है ह़ालां कि येह बहुत सख़्त कलिमा है इस लिये कि **अल्लाह** पाक किसी जगह में होने से पाक है। मसाजिद को **अल्लाह** का घर बोलते हैं, ख़ानए का'बा को भी बैतुल्लाह या'नी **अल्लाह** का घर कहते हैं लेकिन इस से मुराद येह नहीं है कि **अल्लाह** वहां रहता है। लिहाज़ा अगर बच्चा पूछे कि **अल्लाह** कहां है ? तो जवाब दिया जाए : **अल्लाह** है मगर वोह हमें नज़र नहीं आता या इस त़रह़ का कोई और जवाब दिया जाए। बा'ज़ अवक़ात बच्चे ऐसे सुवालात करते हैं कि उन्हें संभालना मुश्किल होता है। बचपन में हम भी सुनते थे कि गाली मत दो ! झूट मत बोलो ! वरना **अल्लाह** सोने की लकड़ी से मारेगा। तो इस त़रह़ की बहुत सी ग़लत़ बातें राइज हैं। बच्चों का मुत़्मइन होना बहुत मुश्किल है, उन में इतनी अ़क़्ल नहीं होती कि येह बातें समझ सकें। लोग उ़मूमन ऐसे सुवालात पर बच्चों को डांट देते होंगे कि चुप करो ! तुम्हें इन बातों की समझ नहीं है, इस त़रह़ बच्चों को नहीं डांटना चाहिये।

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 2/118)

सुवाल बच्चों को **अल्लाह** पाक के बारे में क्या बताना चाहिये ?

जवाब **अल्लाह** "पाक" है, **अल्लाह** पाक "एक" है, हमें सब कुछ **अल्लाह** पाक ही देता है, वोह हमें नज़र नहीं आता, येह नहीं बताएंगे तो बच्चे पूछेंगे : "**अल्लाह** पाक कैसा है ?, कितना बड़ा है ?" वग़ैरा। नीज़ बच्चों को उन की नफ़्सियात के मुत़ाबिक़ समझाया जाए कि "**अल्लाह**

पाक देख रहा है, हम उसे नहीं देख पाते।" हज़रते सहल बिन अ़ब्दुल्लाह तुस्तरी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ को तीन साल की उ़म्र में उन के मामूं ने तरबियत दी थी कि "जब तुम बिस्तर पर लैटने लगो तो तीन बार ज़बान को ह़रकत दिये बिग़ैर दिल ही दिल में येह कलिमात कहो : "اَللّٰہُ مَعِیۡ، اَللّٰہُ نَاظِرٌ اِلَیَّ، اَللّٰہُ شَاھِدِیۡ" या'नी **अल्लाह** पाक मेरे साथ है, **अल्लाह** पाक मुझे देख रहा है, **अल्लाह** पाक मेरा गवाह है।" फिर फ़रमाया : "अब सात बार पढ़ो।" कुछ अ़र्से बा'द फ़रमाया : "अब हर रात ग्यारह बार पढ़ो" येह पढ़ते रहे। (احیاء العلوم، 3/91 ملخصًا) और बा'द में ह़ज़रते सहल बिन अ़ब्दुल्लाह तुस्तरी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ ने उठान ली तो बहुत बड़े वलिय्युल्लाह बन कर उभरे। आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ औलियाए सिद्दीक़ीन में से थे। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 7/185)

सुवाल अक्सर माएं वग़ैरा बच्चों को इस त़रह़ डराती हैं कि "**अल्लाह** बाबा आ जाएगा" इस त़रह़ कहना कैसा ?

जवाब लोग "**अल्लाह** बाबा" ग़ालिबन फ़क़ीर को कहते हैं, कहने वाले की इस से मुराद **अल्लाह** पाक की ज़ात नहीं होती। वैसे बच्चे को इस त़रह़ डराना नहीं चाहिये कि बच्चा डरपोक बन जाएगा।

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 8/84)

सुवाल जब **अल्लाह** पाक देख रहा है तो फ़रिश्ते क्यूं मुक़र्रर हैं ?

जवाब इस बात में कोई शक नहीं कि **अल्लाह** पाक देख रहा है। येह क़ुरआने करीम से साबित है और येह हमारे ईमान का ह़िस्सा है। अगर कोई येह ज़ेह्न बनाए कि **अल्लाह** पाक नहीं देख रहा तो वोह मुसल्मान नहीं रहेगा। फ़रिश्तों को मुक़र्रर करना येह **अल्लाह** पाक की मशिय्यत (या'नी मरज़ी) है कि निज़ाम ऐसे चल रहा है, **अल्लाह** पाक फ़रिश्तों का हरगिज़

हरगिज़ मोहताज नहीं है। फ़रिश्तों का लिखना येह भी एक कसोटी (या'नी इम्तिहान) है कि कितने लोगों का इस के ज़रीए ईमान पुख़्ता होता होगा और कई लोगों का ईमान बरबाद भी होता होगा तो हर मुआमले में कसोटियां या'नी इम्तिहानात हैं।

अल्लाह पाक को हमेशा से ख़बर है

अगर फ़रिश्ते आ'माल न भी लिखें तब भी **अल्लाह** पाक को पता है। फ़रिश्ते तो उस वक़्त लिखेंगे जब उन्हें पता चलेगा कि येह अमल हुवा है लेकिन **अल्लाह** पाक को तो हमेशा से ख़बर है कि कौन क्या करेगा ? अरबों खरबों अफ़राद का और तमाम मुआमलात का हर पल बल्कि पल के करोड़वें हिस्से का भी बल्कि मेरे पास बोलने के लिये अल्फ़ाज़ नहीं हैं लेकिन मेरे रब को वोह सब कुछ पता है। थोड़ी देर के बा'द मेरा क्या होगा ? मेरे ज़ेहन में क्या बात आएगी ? मैं ने क्या बोलना है ? मुझ से पहले, फ़रिश्तों से पहले **अल्लाह** पाक को पता है।

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 1/509, 510)

सुवाल **अल्लाह** पाक की ज़ात के मुतअल्लिक़ इस तरह के वसाविस पहले नहीं पाए जाते थे लेकिन अब ऐसे ज़ेहन बनते जा रहे हैं तो इस की उमूमी वुजूहात क्या हो सकती हैं ?

जवाब **अल्लाह** पाक की ज़ात के मुतअल्लिक़ वसाविस आने का सबब इल्मे दीन की कमी, आशिक़ाने रसूल की सोहबत का न होना है। सोशल मीडिया का किरदार भी हो सकता है कि ऐसी सोच रखने वाले दहरियों और मुन्किरीन की तहरीरें पढ़ने, उन की तक़रीरें और क्लिप सुनने देखने से भी ज़ेहन बरबाद होता होगा। सोशल मीडिया इस्ति'माल करने वाले

सिर्फ़ दा'वते इस्लामी के सोशल मीडिया को जॉइन करें और उन के Video Clipes और तह़रीरात से फ़ाएदा उठाएं। **अल्लाह** पाक के करम से इस त़रह़ के वसाविस ज़ेह्न में नहीं आएंगे। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 1/510)

सुवाल किसी बस्ती को "ख़ुदा की बस्ती" कहना कैसा है ?

जवाब कोई ह़रज नहीं है क्यूं कि हर चीज़ **अल्लाह** पाक की है। चुनान्चे क़ुरआने पाक में हैं : ﴿لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ﴾ (پ3، البقرۃ:284) **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** "**अल्लाह** ही का है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में है।" तो मस्जिद को भी "बैतुल्लाह" कहते हैं, इसी त़रह़ बस्ती भी ह़क़ीक़त में **अल्लाह** पाक की ही है, बल्कि सारी बस्तियां **अल्लाह** पाक की हैं, अगर "ख़ुदा की बस्ती" नाम रख दिया तो इस में कोई ह़रज नहीं। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 8/26)

सुवाल "**अल्लाह** पाक बे परवा बादशाह है" ऐसा कहना कैसा ?

जवाब शर्‌अ़न इस में कोई ह़रज नहीं। क्यूं कि लफ़्ज़ "बे परवा" जब **अल्लाह** पाक के लिये बोला जाएगा तो मा'ना होगा : उसे किसी की ह़ाजत नहीं, न वोह किसी से डरता है, न उसे किसी की ज़रूरत है, वोह बे परवा बादशाह है। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 8/44)

सुवाल "**अल्लाह** पाक ऊपर है" क्या येह कह सकते हैं ?

जवाब **अल्लाह** पाक जगह से पाक है लिहाज़ा येह नहीं कह सकते कि **अल्लाह** पाक ऊपर है या नीचे है या दाएं या बाएं है। (बहारे शरीअ़त, 1/19, ह़िस्सा : 1 माख़ूज़न) बा'ज़ लोग बोलते हैं कि **अल्लाह** पाक आस्मान पर रहता है और कोई बोलता है कि अ़र्श पर रहता है ह़ालां कि **अल्लाह** पाक के लिये कोई मकान या'नी ठहरने, क़ियाम करने और रुकने की जगह हो, ऐसा कोई

मुआ़मला नहीं है। **अल्लाह** पाक का कोई बदन नहीं और वोह जिस्मो जिस्मानिय्यत से पाक है। (درمختار، 2/358ماخوذاً) येह कहना कि "**अल्लाह** पाक ऊपर है" इसे उ़लमा ने कुफ़्र लिखा है। (بحر الرائق، 5/203) **अल्लाह** पाक की ज़ात के तअ़ल्लुक़ से इस त़रह़ के मसाइल समझने के लिये दा'वते इस्लामी के मक्तबतुल मदीना की किताब "कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब" का मुत़ालअ़ा कीजिये। اِنْ شَآءَ اللہ आप का ईमान ताज़ा हो जाएगा और आप को सेंकड़ों नहीं बल्कि हज़ारों ऐसे कुफ़्रिय्यात का पता चल जाएगा जो आज कल लोगों में राइज हैं। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 2/119)

सुवाल अगर अ़दमे तवज्जोह से **अल्लाह** पाक के बारे में मन्फ़ी कलिमात निकल जाएं तो क्या ईमान ज़ाएअ़ हो जाता है ?

जवाब अ़दमे तवज्जोह के कई मा'ना हो सकते हैं, यहां मा'ना वाज़ेह़ नहीं। अगर कहना कुछ चाहता था और सब्क़ते लिसानी से मुंह से बे इख़्तियार कलिमए कुफ़्र निकल गया मगर अब येह उस पर पच करता है (या'नी अपने मुंह से निकली हुई बात पर अड़ा रहता है) कि मैं ने सह़ीह़ कहा है तो अब इस पर कुफ़्र का हुक्म लगेगा कि येह उसे बाक़ी रख रहा है। इस की मिसाल देते हुए भी نَعُوْذُ بِاللہ डर लगता है। बहर ह़ाल अगर मुसल्मान के मुंह से न चाहते हुए **अल्लाह** पाक के बारे में कोई तौहीन आमेज़ कलिमा निकल जाए तो येह फ़ौरन اَسْتَغْفِرُ اللہ, तौबा तौबा, नहीं नहीं वग़ैरा कहेगा, लिहाज़ा रुजूअ़ करने की सूरत में इस पर कोई हुक्म नहीं लगेगा।

(ردالمحتار، 6/353ملخصاً, बहारे शरीअ़त, 2/456, ह़िस्सा : 9)

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 7/169)

सुवाल **अल्लाह** पाक को सितम (या'नी ज़ुल्म) करने वाला कहना कैसा है ?

जवाब **अल्लाह** पाक को सितम करने वाला कहना खुला कुफ़्र है और येह कहने वाला काफ़िर हो जाएगा। (फ़तावा अम्जदिय्या, 4/432) सितम के मा'ना जुल्म के हैं जब कि **अल्लाह** पाक जुल्म नहीं करता और वोह जुल्म करने से पाक है। "कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब" नामी किताब पढ़ें कि इस में इस त़रह़ के बहुत से कुफ़्रिय्या कलिमात की मिसालें दी गई हैं और येह बयान किया गया है कि कौन सी ऐसी बातें हैं कि जिन्हें बोलने के सबब बन्दा इस्लाम से ख़ारिज हो जाता है और उस का निकाह़ टूट जाता है। याद रखिये ! कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में इल्म ह़ासिल करना फ़र्ज़ है। (ردالمحتار، 1/107) आज कल लोगों को कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में इल्म नहीं होता जिस की वज्ह से वोह कुफ़्रिय्या कलिमात बोलते रहते हैं और जो नहीं बोलते वोह सुन कर हां में हां मिलाते हैं। अगर सामने वाला खुला कुफ़्र बोल रहा हो तो इस सूरत में अगर सुनने वाला समझ कर हां में हां करेगा तो वोह भी काफ़िर हो जाएगा। (कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब, स. 71) (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 2/290)

सुवाल **अल्लाह** पाक के बारे में एक मुसल्मान का जो अ़क़ीदा होना चाहिये उस की मा'लूमात न होने की वज्ह से किसी ने येह जुम्ला (मेरी क़िस्मत में शायद **अल्लाह** पाक कुछ लिखना ही भूल गया है) कहा हो तो फिर क्या हुक्म है ?

जवाब لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰه, **अल्लाह** करीम भूल से पाक है, वोह भूलता नहीं है।[1] जो जुम्ला कहा गया है उस में एक ज़रूरते दीनी का इन्कार पाया जा रहा है, जो कुफ़्र है। (बहारे शरीअ़त, 1/173, हिस्सा : 1 माख़ूज़न) अगर कोई

---

1 ... जैसा कि क़ुरआने पाक में **अल्लाह** पाक का इर्शाद है : ﴿وَمَا كَانَ رَبُّكَ نَسِيًّا﴾ (پ16، مریم:64) **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** और तुम्हारा रब भूलने वाला नहीं।

किसी मुल्क के किसी क़ानून की मुख़ालफ़त करे और जब उस को पकड़ा जाए तो वोह कहे कि मुझे इस बारे में मा'लूम नहीं था, तो उस की येह बात सुनी जाएगी या उसे सज़ा दी जाएगी ? ज़ाहिर है उसे सज़ा दी जाएगी, क्यूं कि येह मुल्की क़ानून है। (जिस त़रह़ हर मुल्क के क़वानीन होते हैं इसी त़रह़ इस्लाम के भी क़वानीन हैं और इस्लामी क़ानून है कि किसी भी ज़रूरते दीनी का इन्कार करने वाला शख़्स मुसल्मान नहीं रहता।) इस जुम्ले में तो भूल को **अल्लाह** करीम के लिये जज़्मी त़ौर पर कह दिया है, जो सरीह़ या'नी खुला कुफ़्र है, जो शख़्स भी ऐसा बोलेगा वोह इस्लाम से निकल जाएगा और उस का निकाह़ भी टूट जाएगा। (خلاصۃ الفتاوٰی، 4/384, बहारे शरीअ़त, 2/461, ह़िस्सा : 9)

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 3/288)

सुवाल बा'ज़ अवक़ात गुनाहगार लोग भी ह़ज की सआ़दत ह़ासिल कर लेते हैं, अगर कोई ऐसे किसी शख़्स के बारे में कहे कि "येह तो एक वक़्त की नमाज़ नहीं पढ़ता, बड़ा गुनाहगार आदमी है, इस को ह़ज की तौफ़ीक़ मिल गई, देखो ! **अल्लाह** कैसों कैसों को बुला लेता है, हम तो नमाज़ें पढ़ते हैं मगर **अल्लाह** हम को नहीं बुलाता" ऐसा कहना कैसा ?

जवाब अगर इन मा'नों पर कहता है कि "**अल्लाह** पाक गुनाहगारों पर भी मेह्रबान है और उन्हें भी बुला लेता है, जब कि बा'ज़ अवक़ात नेकों को भी नहीं बुलाता, येह उस की मरज़ी और बे नियाज़ी है" तो ऐसा कहने में ह़रज नहीं है। अगर مَعَاذَاللہ ! ए'तिराज़ करता है कि "**अल्लाह** पाक उन्हें क्यूं बुलाता है ? उसे चाहिये कि नेकों को बुलाए" तो ऐसा शख़्स काफ़िर हो जाएगा। (कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब, स. 141, फ़तावा रज़विय्या, 29/293, 296) (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 3/417)

सुवाल "**अल्लाह** वारिस" कहना कैसा ?

जवाब "**अल्लाह** वारिस" कहना सहीह़ है क्यूं कि **अल्लाह** पाक का एक सिफ़ाती नाम "वारिस" है।

(ابن ماجہ، 4/279، حدیث:3861) (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 4/73)

सुवाल किसी के साथ अगर कुछ हो जाए तो वोह कह देता है कि "**अल्लाह** पाक ने मेरे साथ ज़ुल्म किया" ऐसा कहना कैसा ?

जवाब اَسْتَغْفِرُاللّٰه ! ऐसा कहना कुफ़्र है। **अल्लाह** पाक को ज़ालिम कहने वाला मुसल्मान नहीं रहता। (फ़तावा अम्जदिय्या, 4/432) अगर نَعُوْذُبِاللّٰه किसी ने ऐसा कहा है तो इस से तौबा करे, कलिमा पढ़ कर नए सिरे से मुसल्मान हो और शादी शुदा था तो नए सिरे से निकाह़ भी करे। (फ़तावा अम्जदिय्या, 4/432) किसी का मुरीद था तो अब दोबारा जिस जामेए़ शराइत़ पीर से चाहे मुरीद हो जाए। (कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब, स. 524, 525) **अल्लाह** करीम ईमान सलामत रखे। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 4/304)

सुवाल अपने आप को सच्चा साबित करने के लिये बा'ज़ लोगों को येह कहते हुए सुना है : "**अल्लाह** को ह़ाज़िरो नाज़िर जान कर कह रहा हूं" ऐसा कहना कैसा ?

जवाब उ़लमाए किराम ने **अल्लाह** पाक के लिये ह़ाज़िरो नाज़िर का लफ़्ज़ इस्ति'माल करने से मन्अ़ फ़रमाया है। (बहारे शरीअ़त, 2/932, हिस्सा : 12) ह़ाज़िरो नाज़िर की जगह **अल्लाह** पाक के लिये समीओ़ बसीर का लफ़्ज़ इस्ति'माल किया जाए। (कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब, स. 571) इसी त़रह़ ह़ल्फ़ उठवाया जाता है या'नी क़सम ली जाती है, इस में भी **अल्लाह** पाक के लिये ह़ाज़िरो नाज़िर के अल्फ़ाज़ इस्ति'माल किये जाते हैं जो शर्अ़न मम्नूअ़ और ग़लत़ हैं। ह़ल्फ़ उठाते वक़्त येह अल्फ़ाज़

कहे जाएं : मैं **अल्लाह** पाक को समीओ़ बसीर जान कर कहता हूं।

(फ़तावा रज़विय्या, 14/640, 641, 688, 689) (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 5/351)

सुवाल लोग कहते हैं कि जब **अल्लाह** पाक को दुन्या में नहीं देख सकते तो क़ियामत में किस त़रह़ देखेंगे ?

जवाब जन्नत को भी तो हम ने दुन्या में नहीं देखा और इस के इ़लावा भी बहुत कुछ नहीं देखा मगर हम ईमान लाते हैं, तो जब **अल्लाह** पाक चाहेगा हम जन्नत में ज़रूर जाएंगे, **अल्लाह** पाक की अ़त़ा से मह़बूब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सदक़े जब हम जन्नत में जाएंगे तो वहां सब से बड़ी ने'मत **अल्लाह** पाक का दीदार है। (बहारे शरीअ़त, 1/162, ह़िस्सा : 1) वोह भी **अल्लाह** पाक के करम से अ़त़ा होगा और जैसे **अल्लाह** पाक चाहेगा हम वैसे उस का दीदार करेंगे, इस बारे में अ़क़्ल के घोड़े दौड़ाने की ज़रूरत ही क्या है ? (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 2/181)

सुवाल क्या नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इ़लावा किसी ने **अल्लाह** पाक का दीदार किया है ? अगर किया है तो उन का नाम भी बता दीजिये।

जवाब जागती ह़ालत में सरकार صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इ़लावा किसी ने भी **अल्लाह** पाक का दीदार नहीं किया और आप के इ़लावा किसी और के लिये दुन्या में जागती आंखों से दीदार मुह़ाल है। अलबत्ता ! ख़्वाब में औलियाए किराम को ज़ियारत हो सकती है और हुई भी है जैसा कि ह़ज़रत इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه को ख़्वाब में 100 बार **अल्लाह** पाक का दीदार हुवा। (نبراس، ص169) اِنْ شَآءَ الله हम सब आख़िरत और क़ियामत में नीज़ प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त के सदक़े जब जन्नत में जाएंगे तो वहां भी **अल्लाह** पाक की ज़ियारत करेंगे। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 8/173)

सुवाल "**अल्लाह** पाक की दुआ़ से येह काम हो गया" कहना कैसा है ?

जवाब **अल्लाह** पाक की दुआ़ से सब ठीक है वग़ैरा, इस त़रह़ के जुम्ले लोग जहालत की वज्ह से बोल रहे होते हैं, येह जुम्ला नहीं कहना चाहिये। हम **अल्लाह** पाक की बारगाह में दुआ़ करते हैं, **अल्लाह** पाक किसी से दुआ़ नहीं करता, **अल्लाह** पाक की ज़ात सब से बड़ी है और सब को वोही देने वाला है। लोग आपस में एक दूसरे को भी कहते हैं कि आप की दुआ़ से सब ठीक है, आप की दुआ़ से फ़ुलां काम हो गया, येह जुम्ले तो कह सकते हैं लेकिन येह कहना कि "**अल्लाह** पाक की दुआ़ से येह काम हो गया" दुरुस्त नहीं है। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 10/232)

सुवाल **अल्लाह** पाक को दुआ़ में सख़ी कहना कैसा है ?

जवाब दुआ़ और दुआ़ के इ़लावा भी **अल्लाह** पाक को सख़ी कहना मन्अ़ है। **अल्लाह** पाक को सख़ी कहने के बजाए "जवाद" कहना चाहिये। (फ़तावा रज़विय्या, 27/165) हां ! प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को सख़ी कह सकते हैं। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 2/38)

सुवाल "फ़ुलां काम मैं कर दूंगा, बाक़ी **अल्लाह** मालिक है" कहना कैसा है ?

जवाब इस त़रह़ कहने में कोई ह़रज नहीं। इस का मत़लब येह नहीं कि जो मैं करूंगा उस का **अल्लाह** मालिक नहीं है बल्कि येह इस मा'ना में है कि फ़ुलां काम करने की कोशिश मेरी त़रफ़ से और तक्मील **अल्लाह** पाक की त़रफ़ से होगी जैसा कि हम कहते हैं कि नेकी की दा'वत देना हमारा काम है और हिदायत **अल्लाह** पाक देगा चूंकि हर शै का मालिक **अल्लाह** पाक है, अगर कोई अपने क़लम के बारे में कहे कि क़लम मेरा है तो इस का मत़लब येह नहीं होता कि **अल्लाह** पाक इस का मालिक न रहा बल्कि

इस का ह़क़ीक़ी मालिक **अल्लाह** पाक ही है और **अल्लाह** पाक ने उसे अ़त़ा किया है, इसी त़रह़ येह भी बत़ौरे मुह़ावरा कहा जाता है कि "फ़ुलां काम मैं कर दूंगा, बाक़ी **अल्लाह** मालिक है" लिहाज़ा येह मुह़ावरा बोलने में कोई गुनाह या कुफ़्र नहीं। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 1/204)

सुवाल "**अल्लाह** पाक दुन्या में होने वाले ज़ुल्म को क्यूं नहीं रोकता ?" कहना कैसा है ?

जवाब येह अल्फ़ाज़ ए'तिराज़ के हैं और **अल्लाह** पाक पर ए'तिराज़ करना कुफ़्र है। येह दुन्या दारुल अ़मल है और इस में बन्दों का इम्तिह़ान है लिहाज़ा अगर कोई ज़ुल्म कर भी रहा है तो वोह अपने लिये जहन्नम का अ़ज़ाब तय्यार कर रहा है और जिस पर ज़ुल्म हो रहा है अगर वोह सब्र करे तो उस के लिये जन्नत का ख़ज़ाना है। दुन्या के निज़ाम में **अल्लाह** पाक की बे शुमार ह़िक्मतें होती हैं इस लिये **अल्लाह** पाक ने जो भी किया वोह सह़ीह़ किया और उस पर ए'तिराज़ की कोई गुन्जाइश बल्कि ए'तिराज़ का तसव्वुर भी नहीं है। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 2/504)

सुवाल किसी ने कहा कि "भाई इतनी नेकियां भी न करो कि ख़ुदा की जज़ा कम पड़ जाए" ऐसा कहना कैसा है ?

जवाब لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰه येह खुला कुफ़्र है। किसी ने अगर्चे येह जुम्ला मज़ाक़ में बोला होगा लेकिन मज़ाक़ में बोला गया कुफ़्र भी कुफ़्र ही होता है। तौबा اَسْتَغْفِرُاللّٰه ऐसा सोचना भी नहीं चाहिये और मुसल्मान ऐसा सोच भी नहीं सकता। यक़ीनन येह बुरी सोह़बतों और फ़िल्मी डायलॉग सुनने का नतीजा है, इन में इस त़रह़ की बातें होती होंगी। **अल्लाह** पाक करम फ़रमाए और हमारा ईमान सलामत रखे। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 3/290)

सुवाल **अल्लाह** पाक सब कुछ सुनता जानता है, बा'ज़ लोग फिर भी येह जुम्ला कहते हैं : "आप दुआ़ फ़रमाएं कि **अल्लाह** पाक मेरी सुन ले या मेरी दुआ़ क़बूल कर ले" ऐसा कहना कैसा ?

जवाब **अल्लाह** पाक का एक सिफ़ाती नाम "समीअ़" भी है, समीअ़ का मा'ना है सुनने वाला। याद रहे ! **अल्लाह** पाक का सुनना हमारे सुनने की त़रह़ नहीं है, हम लोग सुनने के लिये जिस्मानी कान के मोह़ताज हैं लेकिन **अल्लाह** पाक कान से पाक है, वोह हमारी त़रह़ जिस्मो जिस्मानिय्यत वाला नहीं है, अगर कोई **अल्लाह** पाक का जिस्मानी कान माने तो वोह काफ़िर हो जाएगा। (درمختار، 2/358 ماخوذاً) **अल्लाह** पाक अपनी शान के लाइक़ सुनता है और बारीक से बारीक आवाज़ भी सुनता है, कोई आवाज़ उस से पोशीदा नहीं है, लिहाज़ा यूं दुआ़ कर सकते हैं : ऐ **अल्लाह** पाक ! मेरी दुआ़ क़बूल फ़रमा ले। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 6/222)

सुवाल **अल्लाह** पाक को God कहना कैसा है ?

जवाब **अल्लाह** पाक के लिये God जैसे अल्फ़ाज़ इस्ति'माल करने से बचना चाहिये। **अल्लाह** पाक के जो मुबारक नाम मश्हूर हैं और जिन नामों से आ़शिक़ाने रसूल उ़लमाए किराम **अल्लाह** पाक का ज़िक्रे ख़ैर करते हैं हम ने सिर्फ़ वोही नाम इस्ति'माल करने हैं और God वग़ैरा अल्फ़ाज़ इस्ति'माल करने से बचना है। **अल्लाह** पाक के लिये **अल्लाह**, ख़ुदा और परवर्दगार जैसे अल्फ़ाज़ इस्ति'माल किये जा सकते हैं अगर्चे परवर्दगार और ख़ुदा अ़रबी नाम नहीं हैं, मगर उ़लमाए किराम इन्हें इस्ति'माल करते हैं। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 1/371)

सुवाल क्या **अल्लाह** पाक से सब कुछ मांग सकते हैं ?

जवाब जी हां ! तमाम जाइज़ चीज़ें **अल्लाह** पाक से मांग सकते हैं। अलबत्ता गुनाहों की दुआ़ नहीं कर सकते। (फ़ज़ाइले दुआ़, स. 176) जैसे نَعُوْذُبِاللّٰه येह दुआ़ नहीं कर सकते कि मुझे शराब दे दे।

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 6/317)

सुवाल घर में जवान मौत हो जाए तो बा'ज़ अवक़ात बे सब्री में ज़बान से ऐसे अल्फ़ाज़ निकल जाते हैं जो नहीं निकलने चाहिएं, इस के मुतअ़ल्लिक़ कुछ इर्शाद फ़रमा दीजिये।[1]

जवाब घर में जवान या किसी की भी मौत हो जाए तो सब्र ही करना चाहिये। इस मौक़अ़ पर बा'ज़ अवक़ात ज़बान से ऐसे अल्फ़ाज़ निकल जाते हैं जो नहीं निकलने चाहिएं। बा'ज़ अवक़ात तो वोह जुम्ले कुफ़्रिय्या भी होते हैं मसलन बा'ज़ लोग यूं कहते होंगे कि इस की मरने की कोई उ़म्र थी ? बा'ज़ कहते होंगे : **या अल्लाह !** तुझे इस की जवानी पर भी तर्स नहीं आया ? نَعُوْذُبِاللّٰه ! अगर किसी ने येह कहा तो कहने वाला काफ़िर हो गया, इस्लाम से निकल गया क्यूं कि उस ने **अल्लाह** पाक को बे रह़्म कहा। यक़ीनन **अल्लाह** पाक बे रह़्म नहीं है। **अल्लाह** पाक जो करता है वोह दुरुस्त करता है, सह़ीह़ करता है। किसी का वक़्त जब पूरा हो जाता है तो उस का इन्तिक़ाल हो जाता है। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 1/361)

सुवाल अगर किसी ने ता'ज़ियत करते वक़्त कुफ़्रिय्या जुम्ला बक दिया अब उस की ताईद करना कैसा ?

जवाब कुफ़्रिय्या जुम्ले की ताईद भी कुफ़्र है। अगर ग़मी के मौक़अ़ पर बन्दा ख़ुद कुफ़्रिय्या जुम्ला नहीं बोलता तो बसा अवक़ात ता'ज़ियत

---

1 ... येह और इस से अगला सुवाल शो'बा मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत ने क़ाइम किया है और जवाब अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने इनायत फ़रमाया है।

करने वाले बुलवा देते हैं मसलन कोई ता'ज़ियत करते हुए कहेगा : **अल्लाह** पाक को पता नहीं इस की क्या ज़रूरत पेश आ गई थी जो जवानी में ही इसे उठा लिया ? अब सुनने वाला भी ऐसे जुम्ले कहेगा ? वाक़ेई कोई ज़रूरत पेश आ गई होगी या फ़क़त हां ! हां ! कह कर ही ताईद कर देगा तो ऐसे जुम्ले बोलना या उन की ताईद करना दोनों बातें ही कुफ़्र हैं क्यूं कि **अल्लाह** पाक को किसी की ह़ाजतो ज़रूरत नहीं, वोह किसी का मोह़ताज नहीं, हम उस के मोह़ताज हैं चुनान्चे इर्शादे रब्बुल इ़बाद है : ﴿وَاللّٰهُ الْغَنِیُّ وَاَنْتُمُ الْفُقَرَآءُ ۚ﴾ (پ26، محمد:38) **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** "और **अल्लाह** बे नियाज़ है और तुम सब मोह़ताज।" तो हम सब उस के दर के मोह़ताज हैं लिहाज़ा अगर किसी ने **अल्लाह** पाक को मोह़ताज कहा तो वोह काफ़िर हो गया।

कुफ़्र बकने से निकाह़ और ईमान ख़त्म हो जाता है

जिस ने इस त़रह़ का कुफ़्रिय्या जुम्ला बका तो उस का ईमान और निकाह़ दोनों ख़त्म हो गए बल्कि जिन्हों ने समझने के बा वुजूद हां में हां मिलाई, अगर्चे मुंह से नहीं बोले फ़क़त सर ही हिलाया और दिल में उस बात को दुरुस्त जाना तो येह भी इस्लाम से निकल गया, उस को भी नए सिरे से तौबा कर के कलिमा पढ़ना होगा, अगर शादी शुदा था तो निकाह़ भी दोबारा करना होगा, ह़ज किया था तो वोह भी गया लिहाज़ा इस्तिता़अ़त होने की सूरत में दोबारा ह़ज करना होगा। बाक़ी सारी नेकियां भी कुफ़्र के सबब बरबाद हो जाती हैं, अगर ज़मानए इस्लाम की क़ज़ा नमाज़ें बाक़ी थीं तो वोह ईमान लाने के बा'द अदा करना होंगी। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 1/363)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

अगले हफ़्ते का रिसाला

DAWATE ISLAMI INDIA

FGN Channel
Dekhte Rahiye

MAKTABATUL MADINA INDIA

Delhi : 421, Urdu Market, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-110006 +91-8178862570

Mumbai : 19/20, Mohammad Ali Road, Opp. Mandavi Post Office, Mumbai-400003 +91-9320558372

Ahmedabad : Faizane Madina, Tinkonia Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad-380001 +91-9327168200

Nagpur : Opp. Garib Nawaz Masjid, Saifi Nagar Road, Mominpura, Nagpur-440018 +91-9326310099

www.maktabatulmadina.in feedbackmmhind@gmail.com

For Home Delivery of Books Please Contact on (T&C Apply) +91-9978626025